ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 12 | ISSUE - 8 | APRIL - 2026

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका का ऐतिहासिक दृष्टिकोण

डॉ. रामबाबू मेहर
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय नर्मदापुरम् (म.प्र.)

भूमिका

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका और स्थिति का अध्ययन न केवल इतिहास के प्रति हमारी समझ को विस्तार देता है, बल्कि यह दर्शाता है कि कैसे सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धारणाओं ने समय–समय पर महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया। भारत के प्राचीन काल में स्त्रियों के अधिकार, सामाजिक प्रभुत्व, शिक्षा, धार्मिक भागीदारी और आर्थिक स्वतंत्रता के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। इन परिवर्तनों को समझने के लिए हमें वैदिक काल से लेकर महाजनपद, बौद्ध–जैन परंपराओं और ग्रंथों तक की ऐतिहासिक स्रोतों पर विचार करना आवश्यक है।

यह शोध–पत्र प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, महाकाव्य, धर्मशास्त्र तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों के आधार पर यह विश्लेषण किया गया है कि समाज में महिलाओं की स्थिति क्या थी ? और समय के साथ उसमें किस प्रकार परिवर्तन आया। प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा, धर्म और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, जबकि उत्तर वैदिक काल में कुछ सामाजिक प्रतिबंधों का विकास हुआ। इस शोध में प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्द – वैदिक काल, महाकाव्य, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना-

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी रही है। वे केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों, शिक्षा, दर्शन, राजनीति तथा कला–संस्कृति में भी उनकी सक्रिय भागीदारी थी। भारतीय सभ्यता में नारी को 'शक्ति' का रूप माना गया है। उन्होंने सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में सदैव समाज को दिशा देने, नैतिक मूल्यों को स्थापित करने और जनमानस को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में नारी केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं थी, बल्कि वह समाज की नैतिक चेतना और सांस्कृतिक परंपराओं की संवाहिका भी थी। वैदिक काल से लेकर महाकाव्य काल तक महिलाओं ने समाज में जागरूकता फैलाने, धर्म और कर्तव्य का बोध कराने तथा सामाजिक संतुलन बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाई।
वैदिक काल (लगभग 1500–500 ई.पू.) में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक सम्मानजनक थी। उस समय समाज में महिलाओं को शिक्षा–विज्ञान, वेदों के ज्ञान और आध्यात्मिक विचारों में भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद में गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, अपाला, विष्ववारा जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने ज्ञान–सभाओं में पुरुषों के साथ विमर्श किया और दार्शनिक प्रश्नों में योगदान दिया। इस काल में महिलाओं को ब्रह्मणिक शिक्षा लेने तथा यज्ञ–संस्कारों में भाग लेने का अवसर भी मिलता था, जो स्त्रियों के सामाजिक–बौद्धिक स्वातंत्र को दर्शाता है। (Puirp[1],)

ऋग्वेद में नारी को ज्ञान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। वैदिक युग में महिलाएँ शिक्षित थीं और वे धार्मिक तथा सामाजिक सभाओं में भाग लेती थीं। इससे स्पष्ट होता है कि वे समाज में जागरूकता का प्रसार करती थीं। वैदिक मंत्रों में स्त्री–पुरुष की समानता का भाव व्यक्त किया गया है–"समानी वा आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।" (ऋग्वेद 10.191.4) इस श्लोक का तात्पर्य है कि समाज में सभी के विचार और उद्देश्य समान हों। यह सामाजिक समरसता और जागरूकता की भावना को दर्शाता है। महिलाओं ने इस समरसता को परिवार और समाज में बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नलंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा–केंद्रों में स्त्रियों के अध्ययन का प्रमाण मिलता है, जिससे उनका शिक्षित समुदाय में सहभागिता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। (Culture and Heritage[2],)

गार्गी ने राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य से दार्शनिक प्रश्न पूछे, जो उस समय महिलाओं की बौद्धिक स्वतंत्रता को दर्शाता है। यह संवाद समाज में विचार–विमर्श की परंपरा और बौद्धिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता था। महिलाएँ यज्ञों में अपने पति के साथ सहभागी होती थीं। पत्नी को 'सहधर्मिणी' कहा जाता था, जिसका अर्थ है धर्म पालन में समान भागीदार। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ज्ञान और तर्क की धारा को भी आगे बढ़ा सकती हैं।

धार्मिक एवं सामाजिक ग्रंथों में स्त्रियों की भूमिका''

महाकाव्य एवं पुराणों में स्त्री पात्र''

प्राचीन भारतीय महाकाव्यों–रामायण और महाभारत–में स्त्रियों के व्यक्तित्व और भूमिका को गहन रूप से दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए, सीता और द्रौपदी जैसी नायिकाएँ न केवल धार्मिक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हैं, बल्कि उनके निर्णय और निर्णय–प्रक्रियाएँ सामाजिक और राजनैतिक संदर्भों में भी महत्वपूर्ण हैं। यह पात्र केवल पितृ–निष्ठ या पतिव्रता का चित्रण नहीं करते, बल्कि वे परिस्थिति के अनुसार विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाली स्वतंत्र चरित्र के रूप में उभरते हैं। (Routledge[3],)

रामायण में सीता का चरित्र सामाजिक आदर्शों को स्थापित करता है। सीता ने त्याग, धैर्य और मर्यादा का पालन करते हुए समाज को नैतिक शिक्षा दी। सीता का जीवन यह सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य और सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। इससे समाज में नैतिक जागरूकता का प्रसार हुआ। रामायण में ''सीता'' को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे त्याग, धैर्य और पतिव्रता धर्म की प्रतिमूर्ति हैं। अनन्या राघवेणाहं भास्करेण प्रभा यथा।"(वाल्मीकि रामायण) अर्थात जैसे सूर्य की किरण सूर्य से अलग नहीं होती, वैसे ही मैं राम से अलग नहीं हूँ। सीता का चरित्र उस समय की सामाजिक अपेक्षाओं को दर्शाता है, परंतु साथ ही उनकी शक्ति और आत्मसम्मान को भी प्रकट करता है।

महाभारत में ''द्रौपदी'' एक सशक्त और आत्मसम्मानी नारी के रूप में सामने आती हैं। कौरव सभा में उनका प्रश्न न्याय और धर्म की स्थापना का कारण बना। धर्मो रक्षति रक्षितः।" अर्थात जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। द्रौपदी का चरित्र दर्शाता है कि महिलाएँ केवल मौन दर्शक नहीं थीं, बल्कि न्याय और सत्य के लिए संघर्ष करने वाली व्यक्तित्व थीं। महाभारत में द्रौपदी का चरित्र सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रतीक है।

बाद के समय में धर्मशास्त्रों की वृद्धि के साथ महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता पर कुछ प्रतिबंध भी आरंभ हुए। उदाहरण के लिए, 'मनुस्मृति' जैसे ग्रंथों में स्त्रियों को पूज्यनीय माना गया। कहा गया है–"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।" (मनुस्मृति) अर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। जहाँ उनका अनादर होता है, वहाँ सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं। यह श्लोक दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय चिंतन में नारी को अत्यंत सम्माननीय स्थान प्राप्त था।

भारतीय समाज में समय–समय पर महिलाओं की स्थिति में कुछ उतार–चढ़ाव भी आए। (Puirp1,) कुछ स्मृति ग्रंथों ने उनके लिए सामाजिक नियम निर्धारित किए। यह संवाद समाज में विचार–विमर्श की परंपरा और बौद्धिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता था। जिनमें महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान पर बल दिया गया, परंतु साथ ही उनकी स्वतंत्रता पर कुछ सीमाएँ भी निर्धारित की गईं। जैसे–"पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।" (मनुस्मृति) यह श्लोक दर्शाता है कि उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हो गई थी।

बौद्ध और जैन परंपराओं ने प्राचीन भारत में स्त्रियों के लिए नए सामाजिक तथा आध्यात्मिक स्थान बनाए। बुद्ध की सासनी (गौतमी) और अन्य समान विचारधारा वाली स्त्रियाँ बौद्ध संघ में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं, जिससे स्त्रियों को सार्वजनिक चर्चाओं और परंपराओं में सहभागिता के अवसर मिले। (Archives4,) कूटनीतिक और आर्थिक जीवन में भी स्त्रियों की उपस्थिति दर्ज होती है। 'अर्थशास्त्र' में महिलाओं को व्यापार, कृषि और संसाधन प्रबंधन में योगदान देने वाले के रूप में वर्णित किया गया है, जिससे यह पता चलता है कि वे सिर्फ गृहकार्यों तक ही सीमित नहीं थीं, बल्कि आर्थिक जीवन में भी सक्रिय थीं। (Culture and Heritage2,) प्राचीन भारत में कुछ महिलाएँ शासन और प्रशासन में भी सक्रिय रहीं। यद्यपि यह संख्या कम थी, फिर भी यह दर्शाता है कि समाज में उनकी भूमिका केवल घरेलू नहीं थी। महाभारत में सत्यवती, गांधारी और कुंती जैसे पात्र राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करते दिखाई देते हैं।

समय–समय पर सामाजिक विभिन्न संरचनाओं और धर्मशास्त्रों के प्रभाव के कारण स्त्रियों के अधिकार और उनकी स्वतंत्रता में काफी परिवर्तन आए। विशेष रूप से उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा–अधिकार, धार्मिक भागीदारी एवं सामाजिक आजादी पर पितृ–प्रधान दृष्टिकोण का प्रभुत्व बढ़ा। इस चरण में विवाह के प्रकार, महिला संपत्ति–अधिकार तथा उनके सामाजिक भागीदारी में सीमाएँ और कठोरता आई। (Social Studies Journal5,)

प्राचीन भारतीय समाज में नारी को 'गृहलक्ष्मी' और 'सहधर्मिणी' कहा गया है। इसका अर्थ है कि वह केवल घर की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि धर्म और कर्तव्य में समान भागीदार थी। महिलाएँ परिवार में शिक्षा, अनुशासन और नैतिकता का वातावरण बनाती थीं। वे बच्चों को सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा जैसे मूल्यों की शिक्षा देती थीं। यही मूल्य आगे चलकर समाज की नींव बनते थे। महिलाएँ त्योहारों, व्रतों और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से सामाजिक एकता और सांस्कृतिक जागरूकता को बनाए रखती थीं। वे परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती थीं।

प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका को एकरेखीय दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। प्रारंभिक काल में उन्हें शिक्षा, संपत्ति और धार्मिक कार्यों में अधिकार प्राप्त थे। महाकाव्यों में वे नैतिक शक्ति और साहस का प्रतीक हैं। परंतु उत्तर काल में सामाजिक प्रतिबंधों ने उनकी स्वतंत्रता को सीमित किया। इस प्रकार, महिलाओं की स्थिति समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही। प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और विविधतापूर्ण थी। वे केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित

नहीं थीं, बल्कि धार्मिक, बौद्धिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सक्रिय थीं। यद्यपि समय के साथ उनकी स्वतंत्रता में कमी आई, फिर भी भारतीय परंपरा में नारी को 'शक्ति' और 'मातृशक्ति' के रूप में सम्मानित स्थान प्राप्त रहा।

निष्कर्ष

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक संदर्भों से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ इतिहास के सतत् प्रवाह में शिक्षक, धार्मिक अनुयायी, गृहस्थी की प्रबंधक, और सामाजिक–सांस्कृतिक संस्थाओं में सक्रिय रही हैं। सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उन्होंने ज्ञान, नैतिकता, धर्म और संस्कृति के माध्यम से समाज को दिशा दी। वैदिक काल की विदुषी महिलाओं से लेकर महाकाव्यों की सशक्त नायिकाओं तक, नारी ने सामाजिक चेतना को जागृत करने में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने यह सिद्ध किया कि समाज की प्रगति और संतुलन महिलाओं की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। प्राचीन भारतीय परंपरा में नारी को शक्ति, करुणा और ज्ञान का स्रोत माना गया, और यही दृष्टिकोण सामाजिक जागरूकता का आधार बना। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में महिलाएँ सामाजिक जागरूकता की मुख्य स्तंभ थीं, जिनके योगदान ने भारतीय समाज को स्थिरता, नैतिकता और सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की।

संदर्भ :–

- Biswal, A. K. (2025). *The Role of Women in Vedic and Smrti Literature: A Study of Social and Cultural Contributions in Ancient India*. Universal Innovative Research Publication, 3(4), 49–53.
- Kaur, G. (2025). *Position of women in ancient India*, International Journal of Arts, Humanities and Social Studies, 7(1)
- Singhal, S. (2025). *The Role of Women in Ancient Indian History: A Re-Evaluation*. Bodhi Path, vVol-29, P 5–10
- Basu, S. (2025). *Women Scholars in Ancient India: Guardians of Wisdom*.
- Clarisse Bader, *Women in Ancient India: Moral and Literary Studies*, Trubner & Co., London
- *Kane, P. V. 1996, 'History of Dharmashastra' Vol- 1&2, Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune*
- *Lutgendorf, P. 1992, 'The Life of a Text: Performing the Ramcaritmanas of Tulsidas', University of California Press,*